

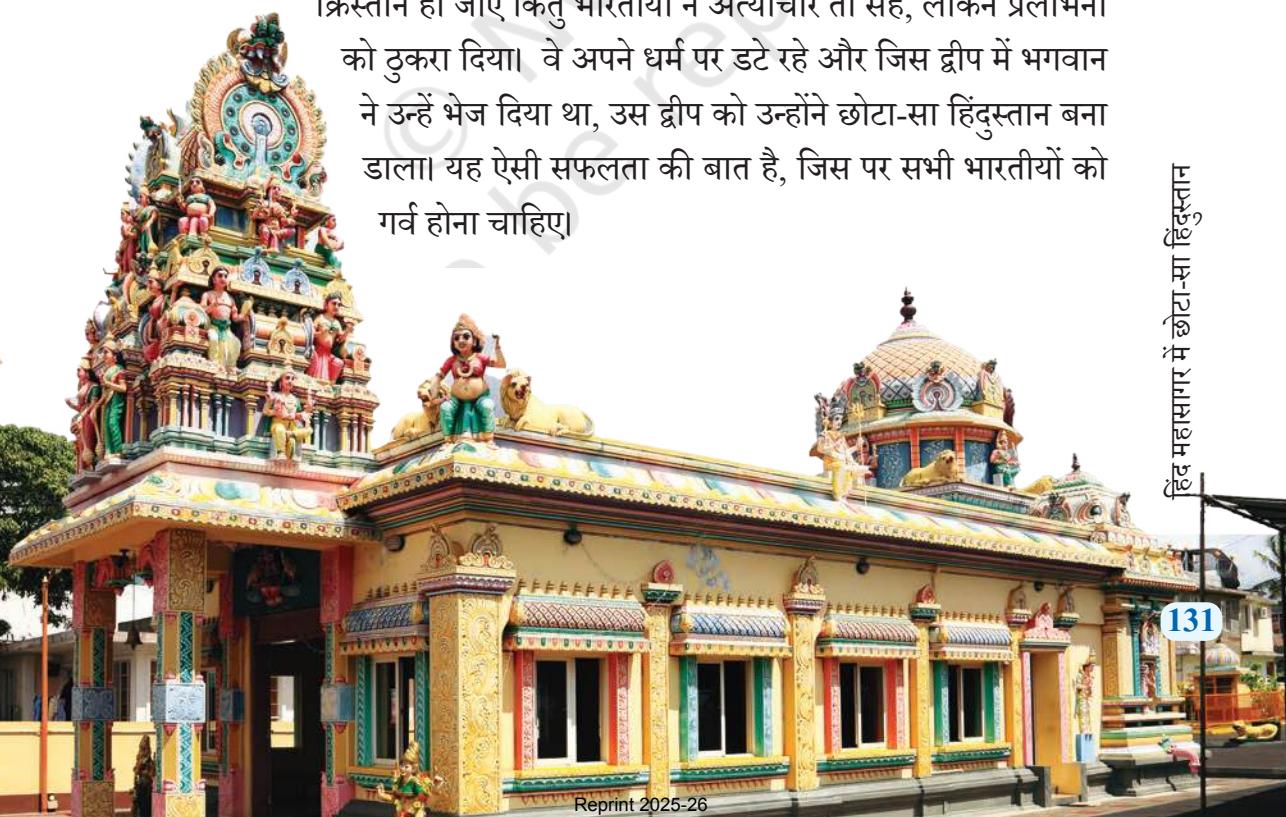
वही संबंध है, जो संबंध भोजपुरी का हिंदी से है। और क्रेयोल के बाद मॉरिशस की दूसरी जनभाषा भोजपुरी को ही मानना पड़ेगा। प्रायः सभी भारतीय भोजपुरी बोलते अथवा उसे समझ लेते हैं। यहाँ तक कि भारतीयों के पड़ोस में रहने वाले चीनी भी भोजपुरी बखूबी बोल लेते हैं। किंतु, मॉरिशस की भोजपुरी शाहाबाद या सारन की भोजपुरी नहीं है। उसमें फ्रेंच के इतने संज्ञापद घुस गए हैं कि आपको बार-बार शब्दों के अर्थ पूछने पड़ेंगे।

मॉरिशस में ऊख की खेती और उसके व्यवसाय को जो सफलता मिली है, भारतीयों के कारण मिली है। मॉरिशस की असली ताकत भारतीय लोग ही हैं। सारा मॉरिशस कृषि-प्रधान द्वीप है, क्योंकि चीनी वहाँ का प्रमुख अथवा एकमात्र उद्योग है। किंतु भारतीय वंश के लोग यदि इस टापू में नहीं गए होते, तो ऊख की खेती असंभव हो जाती और चीनी के कारखाने बढ़ते ही नहीं।

भारत में बैठे-बैठे हम यह नहीं समझ पाते कि भारतीय संस्कृति कितनी प्राणवती और चिरायु है। किंतु, मॉरिशस जाकर हम अपनी संस्कृति की प्राणवत्ता का ज्ञान आसानी से प्राप्त कर लेते हैं। मालिकों की इच्छा तो यही थी कि भारतीय लोग भी

क्रिस्तान हो जाएँ किंतु भारतीयों ने अत्याचार तो सहे, लेकिन प्रलोभनों को ठुकरा दिया। वे अपने धर्म पर डटे रहे और जिस द्वीप में भगवान ने उन्हें भेज दिया था, उस द्वीप को उन्होंने छोटा-सा हिंदुस्तान बना डाला। यह ऐसी सफलता की बात है, जिस पर सभी भारतीयों को गर्व होना चाहिए।

हिंदू महासागर में छोटा-सा हिंदुस्तान



मॉरिशस के प्रत्येक प्रमुख ग्राम में शिवालय होता है। मॉरिशस के प्रत्येक प्रमुख ग्राम में हिंदू तुलसीकृत रामायण (रामचरितमानस) का पाठ करते हैं अथवा ढोलक और झाँझ पर उसका गायन करते हैं। मॉरिशस के मंदिरों और शिवालयों को मैंने अत्यन्त स्वच्छ और सुरम्य पाया। कितना अच्छा हो, यदि हम भारत में भी अपने मंदिरों और तीर्थ स्थानों को उतना ही स्वच्छ और सुरम्य बनाना आरंभ कर दें, जितने स्वच्छ वे मॉरिशस में दिखाई देते हैं।

भारत के पर्व-त्योहार मॉरिशस में भी प्रचलित हैं। किंतु वर्ष का सर्वश्रेष्ठ धार्मिक पर्व शिवरात्रि है। मॉरिशस के मध्य में एक झील है, जिसका संबंध हिंदुओं ने परियों से बिठा दिया है और उस झील का नाम अब परी-तालाब हो गया है। परी-तालाब केवल तीर्थ ही नहीं, दृश्य से भी पिकनिक का स्थान है। किंतु, वहाँ पिकनिक पर जाने वाले लोग अपने साथ माँस-मछली नहीं ले जाते, न अपवित्रता का वहाँ कोई व्यापार करते हैं।

शिवरात्रि के समय सारे मॉरिशस के हिंदू श्वेत वस्त्र धारण करके कंधों पर काँवर लिए जुलूस बाँधकर परी तालाब पर आते हैं और परी-तालाब का जल भरकर अपने-अपने गाँव के शिवालय को लौट जाते हैं तथा शिवजी को जल चढ़ाकर अपने घरों में प्रवेश करते हैं। ये सारे कृत्य वे बड़ी ही भक्ति-भावना और पवित्रता से करते हैं। सभी वयस्क लोग उस दिन उजली धोती, उजली कमीज़ और उजली गाँधी टोपी पहनते हैं। हाँ, बच्चे हाफ पैंट पहन सकते हैं, लेकिन गाँधी टोपी उस दिन उन्हें भी पहननी पड़ती है। परी-तालाब पर लगने वाला यह मेला मॉरिशस के प्रमुख आकर्षणों में से एक है और उसे देखने को अन्य धर्मों के लोग भी काफ़ी संख्या में आते हैं।

— रामधारी सिंह ‘दिनकर’



लेखक से परिचय

आपने जो रोचक यात्रा-वृत्तांत पढ़ा है, उसे हिंदी के प्रसिद्ध लेखक रामधारी सिंह 'दिनकर' ने लिखा है। 'दिनकर' की रचनाओं की विशेषता है— भारत और भारत की संस्कृति। उनकी रचनाओं में वीरता, उत्साह और देशप्रेम का भाव अधिक है। स्वतंत्रता मिलने के बाद भी भारत का गौरव-गान उनकी रचनाओं का विषय बना रहा। उन्होंने आप जैसे बच्चों के लिए भी पुस्तकें लिखी हैं, जैसे— मिर्च का मज्जा, पढ़कू की सूझ और सूरज का ब्याह आदि।



पाठ से

आइए, अब हम इस पाठ को थोड़ा और निकटता से समझ लेते हैं। आगे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी। आइए इन गतिविधियों को पूरा करते हैं।



मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए—

(1) हिरण समूह में क्यों खड़े थे?

- भागने पर उन्हें सिंह के आक्रमण का डर था।
- वे भाग चुके हिरणों के लौटने की प्रतीक्षा में थे।
- वे बीच खड़े असावधान जिराफ की रक्षा कर रहे थे।
- सिंह उनसे उदासीन थे अतः उन्हें कोई खतरा नहीं था।

(2) मॉरिशस छोटे पैमाने पर भारतवर्ष ही है। कैसे?

- गन्ने की खेती अधिकतर भारतीयों द्वारा की जाती है।
- अधिकतर जनसंख्या भारत से जाने वालों की है।
- सभी भारतवासी परी तालाब पर एकत्रित होते हैं।
- भारत की बहुत-सी विशेषताएँ वहाँ दिखाई देती हैं।

(ख) अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए और कारण बताइए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?



पंक्तियों पर चर्चा

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए।

“भारत में बैठे-बैठे हम यह नहीं समझ पाते कि भारतीय संस्कृति कितनी प्राणवती और चिरायु है। किंतु, मॉरिशस जाकर हम अपनी संस्कृति की प्राणवत्ता का ज्ञान आसानी से प्राप्त कर लेते हैं।”



सोच-विचार के लिए

इस यात्रा-वृत्तांत को एक बार फिर से पढ़िए और निम्नलिखित के बारे में पता लगाकर अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए—

- (क) “नैरोबी का नेशनल पार्क चिड़ियाघर नहीं है।”
नेशनल पार्क और चिड़ियाघर में क्या अंतर है?
- (ख) “हम लोग पेड़-पौधे और खरपात से भी बदतर समझे गए।”
वे कौन थे जिन्होंने लेखक और अन्य लोगों को पेड़-पौधों और खरपात से भी बदतर समझ लिया था? उन्होंने ऐसा क्यों समझ लिया था?
- (ग) “मॉरिशस की असली ताकत भारतीय लोग ही हैं।”
पाठ में इस कथन के समर्थन में कौन-सा तर्क दिया गया है?
- (घ) “उस द्वीप को उन्होंने छोटा-सा हिंदुस्तान बना डाला।”
भारत से गए लोगों ने मॉरिशस को हिंदुस्तान जैसा कैसे बना दिया है?



मिलकर करें मिलान

पाठ में से कुछ शब्द चुनकर स्तंभ 1 में दिए गए हैं। उनसे संबंधित वाक्य स्तंभ 2 में दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और रेखा खींचकर शब्दों का मिलान उपयुक्त वाक्यों से कीजिए। इसके लिए आप शब्दकोश, इंटरनेट, पुस्तकालय या अपने शिक्षकों की सहायता ले सकते हैं।

स्तंभ 1	स्तंभ 2
1. अफ्रीका	1. यह अफ्रीका महाद्वीप के एक देश 'केन्या' की राजधानी है।
2. नैरोबी	2. यह श्रीराम के जीवन पर आधारित अमर ग्रंथ 'रामचरितमानस' लिखने वाले कवि का नाम है।
3. रक्तचाप	3. यह एशिया के बाद दुनिया का सबसे बड़ा महाद्वीप है।
4. बी.ओ.ए.सी.	4. यह रक्त-वाहिनियों अर्थात् नसों में बहते रक्त द्वारा उनकी दीवारों पर डाले गए दबाव का नाम है।
5. भूमध्य रेखा	5. यह दो भाषाओं के मिलने से बनी नई भाषा का नाम है।
6. देशान्तर रेखा	6. यह 'ब्रिटिश ओवरसीज एयरवेज कॉरपोरेशन' नाम का छोटा रूप है। यह एक बहुत पुरानी विदेशी विमान कंपनी थी।
7. तुलसीदास	7. यह पृथ्वी के चारों ओर एक काल्पनिक वृत्त है जो पृथ्वी को दो भागों में बाँटता है—उत्तरी भाग और दक्षिणी भाग।
8. क्रेयोल	8. यह बाँस का एक मज्जबूत डंडा होता है जिसे काँवड़ या बहंगी भी कहा जाता है, जिसके दोनों सिरों पर बँधी हुई दो टोकरियों या छीकों में यात्री गंगाजल या अन्य वस्तुएँ भरकर ले जाते हैं।
9. काँवर	9. ये ग्लोब पर उत्तर से दक्षिण की ओर खींची जाने वाली काल्पनिक रेखाएँ हैं। ये उत्तरी ध्रुव को दक्षिणी ध्रुव से मिलाती हैं।





यात्रा-वृत्तांत की रचना

“इतने में कोई मील-भर की दूरी पर हिस्नों का एक झुंड दिखाई पड़ा। अब दो जवान सिंह उठे और दो ओर को चल दिए। एक तो थोड़ा-सा आगे बढ़कर एक जगह बैठ गया, लेकिन दूसरा घास के बीच छिपता हुआ मोर्चे पर आगे बढ़ने लगा।”

इन वाक्यों को पढ़कर ऐसा लगता है मानो हम लेखक की आँखों से स्वयं वह दृश्य देख रहे हैं। मानो हम स्वयं भी उस स्थान की यात्रा कर रहे हैं, जहाँ का वर्णन लेखक ने किया है। यह इस यात्रा-वृत्तांत की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। यदि आप इस यात्रा-वृत्तांत को थोड़ा और ध्यान से पढ़ेंगे तो आपको और भी बहुत-सी विशेषताएँ पता चलेंगी।

इस पाठ को एक बार फिर से पढ़िए और इसकी रचना पर ध्यान दीजिए। आपको जो विशेष बातें दिखाई दें, उन्हें आपस में साझा कीजिए और लिख लीजिए। जैसे – लेखक ने बताया है कि वह एक स्थान से दूसरे स्थान तक कैसे और कब पहुँचा।



अनुमान या कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए—

(क) “मॉरिशस वह देश है, जहाँ बनारस भी है, गोकुल भी है और ब्रह्मस्थान भी।”

मॉरिशस में लोगों ने गली-मोहल्लों के नाम इस तरह के क्यों रखे होंगे?

(ख) “कोई सात-आठ सिंह लेटे या सोए हुए थे और उन्हें घेरकर आठ-दस मोटरें खड़ी थीं।”

आपने पढ़ा कि केन्या का राष्ट्रीय पार्क पर्यटकों से भरा रहता है। पर्यटक जंगली जानवरों को घेरे रहते हैं। क्या इसका उन पशुओं पर कोई प्रभाव पड़ता होगा? अपने उत्तर के कारण भी बताइए।

(संकेत— राष्ट्रीय पार्क के बंदरों, सिंहों का व्यवहार भी बदल गया है।)

(ग) “हिस्नों का एक झुंड दिखाई पड़ा, जिनके बीच एक जिराफ बिल्कुल बेवकूफ की तरह खड़ा था।”

सिंहों के आस-पास होने के बाद भी जिराफ क्यों खड़ा रहा होगा?

(घ) “मॉरिशस के मध्य में एक झील है, जिसका संबंध हिंदुओं ने परियों से बिठा दिया है और उस झील का नाम अब परी-तालाब हो गया है।”

उस झील का नाम ‘परी-तालाब’ क्यों पड़ा होगा?

(ड) आपको यह जानकार आश्चर्य होगा कि लगभग 50 साल पहले ‘परी-तालाब’ का नाम बदलकर ‘गंगा-तालाब’ कर दिया गया है। मॉरिशस के लोगों ने यह नाम क्यों रखा होगा?



शब्दों की बात

नीचे शब्दों से जुड़ी कुछ गतिविधियाँ दी गई हैं। इन्हें करने के लिए आप शब्दकोश, पुस्तकालय, अपने शिक्षकों और साथियों की सहायता भी ले सकते हैं।

संज्ञा के स्थान पर

(क) “हिरनों ने ताढ़ लिया कि उन पर सिंहों की नज़र पड़ रही है। अतएव वे चरना भूलकर चौकन्ने हो उठो।”

इन पंक्तियों में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। इन वाक्यों में ये शब्द किनके लिए उपयोग किए गए हैं? ये शब्द ‘हिरनों’ के लिए उपयोग में लाए गए हैं। आप जानते ही हैं कि ‘हिरन’ यहाँ एक संज्ञा शब्द है। जो शब्द संज्ञा शब्दों के स्थान पर उपयोग में लाए जाते हैं, उन्हें ‘सर्वनाम’ कहते हैं।

अब नीचे दिए गए वाक्यों में सर्वनाम शब्दों को पहचानिए और उनके नीचे रेखा खींचिए—

- “हाँ, बच्चे हाफ पैंट पहन सकते हैं, लेकिन गांधी टोपी उस दिन उन्हें भी पहननी पड़ती है।”
- “भारतीयों ने अत्याचार तो सहे, लेकिन प्रलोभनों को ठुकरा दिया। वे अपने धर्म पर डटे रहे और जिस द्वीप में भगवान ने उन्हें भेज दिया था, उस द्वीप को उन्होंने छोटा-सा हिंदुस्तान बना डाला।”

(ख) ऊपर दिए गए दोनों वाक्यों को सर्वनाम की जगह संज्ञा शब्द लगाकर लिखिए।



पहचान पाठ के आधार पर

आपने इस यात्रा-वृत्तांत में तीन देशों के नाम पढ़े हैं— भारत, केन्या और मॉरिशस। पुस्तकालय या कक्षा में उपलब्ध मानचित्र पर भारत को तो आप सरलता से पहचान ही लेंगे। पाठ में दी गई जानकारी के आधार पर बाकी दोनों देशों को पहचानिए।



पाठ से आगे



आपकी बात

(क) “वहाँ जो कुछ देखा, वह जन्मभर कभी नहीं भूलेगा।”

क्या आपने कभी ऐसा कुछ देखा, सुना या पढ़ा है जिसके बारे में आपको लगता है कि आप उसे कभी नहीं भूल सकेंगे? उसके बारे में अपने समूह में बताइए।

(ख) “हमें अफ्रीका के शेरों से मुलाकात कर लेनी चाहिए।”

‘मुलाकात’ शब्द का अर्थ है ‘मिलना’। लेकिन यहाँ ‘मुलाकात’ शब्द का भाव है—शेरों को पास से देखना। इसके लिए ‘अपनी आँखों से देखना’, ‘सजीव देखना’, ‘भेंट करना’ आदि शब्दों का प्रयोग भी किया जाता है। अपनी बात को और अधिक सुंदर और अनोखा रूप देने के लिए शब्दों के इस प्रकार के प्रयोग किए जाते हैं।

आपने अब तक किन-किन पशु-पक्षियों से ‘मुलाकात’ की है? वह मुलाकात कहाँ हुई थी? बताइए।

(ग) “यह ऐसी सफलता की बात है, जिस पर सभी भारतीयों को गर्व होना चाहिए।”

आपको किन-किन बातों पर गर्व होता है? बताइए।

(संकेत— ये बातें आपके बारे में हो सकती हैं, आपके परिवार के बारे में हो सकती हैं और किसी अन्य व्यक्ति, वस्तु, स्थान, प्राणी आदि के बारे में भी हो सकती हैं।)



कक्षा और घर की भाषाएँ

“प्रायः सभी भारतीय भोजपुरी बोलते अथवा उसे समझ लेते हैं। यहाँ तक कि भारतीयों के पड़ोस में रहने वाले चीनी भी भोजपुरी बखूबी बोल लेते हैं।”

भारत एक बहुभाषी देश है। भारत में लगभग सभी व्यक्ति एक से अधिक भाषाएँ बोल या समझ लेते हैं। आप कौन-कौन सी भाषाएँ बोल-समझ लेते हैं? आपके मित्र कौन-कौन सी भाषाएँ बोल-समझ लेते हैं? इसके बारे में यहाँ दी गई तालिका को पूरा कीजिए—

क्रम संख्या	मैं जिन भाषाओं को बोल-समझ लेता/ लेती हूँ	मेरे मित्र जिन भाषाओं को बोल-समझ लेते हैं	मेरे परिजन जिन भाषाओं को बोल-समझ लेते हैं
कुल संख्या			

(संकेत— इस तालिका को पूरा करने के लिए आपको अपने मित्रों और परिजनों से पूछताछ करनी होगी। पहले भाषाओं के नाम लिखने हैं, बाद में उन नामों को गिनकर उनकी कुल संख्या लिखनी है।)



प्रशंसा या सराहना विभिन्न प्रकार से

“यह द्वीप हिंद महासागर का मोती है, भारत-समुद्र का सबसे खूबसूरत सितारा है।”

इस पाठ में लेखक ने मौरिशस की सराहना में यह वाक्य लिखा है। सराहना करने के लिए ‘दिनकर’ ने द्वीप की तुलना मोती और तारे से की है।

किसी की सराहना अनेक प्रकार से की जा सकती है। आप आगे दी गई तालिका को पूरा कीजिए। पहले नाम लिखिए, फिर इनकी प्रशंसा में एक-एक वाक्य लिखिए। शर्त यह है कि प्रत्येक बार अलग तरह से प्रशंसा करनी है—



सराहना की तालिका

	नाम	प्रशंसा या सराहना का वाक्य
स्वयं		
परिजन		
शिक्षक		
मित्र		
पशु		
स्थान		
सब्ज़ी		
पेड़		



चित्रात्मक सूचना (इंफोग्राफिक्स)

नीचे दिए गए चित्र को देखिए। इसमें चित्रों के साथ-साथ बहुत कम शब्दों में कुछ जानकारी दी गई है। इसे ‘चित्रात्मक सूचना’ कहते हैं।

साल 1834 में 2 नववर को एटलस नाम का जहाज भारतीय मजदूरों को लेकर मॉरिशस पहुंचा था,
जिसे वहाँ पर अप्रवासी दिवस (इडियन अराइवल डे) के रूप में मनाया जाता है।

जब मॉरिशस में गृणा जय हिंद

मॉरिशस में भारतीय मूल के लोगों
की आबादी देश में **68%**
से ज्यादा है।

ब्रिटिश शासक गन्ने के
खेतों में काम करने के लिए
भारतीय मजदूरों को बहार ले गए थे।

यहाँ बताया है कि मॉरिशस की संस्कृति
में भोजपुरी गांवों और हिंदी फ़िल्मों का
खास योगदान है।



इनमें से ज्यादातर विदेश के
थे, लेकिन तमिल, तेलुगु
और माराठियों की तादाद भी
अच्छी-खासी थी।

मॉरिशस के पहले प्रधानमंत्री
शिवसागर रामगुलाम भी भारतीय
मूल के थे।



- (क) इस ‘चित्रात्मक सूचना’ के आधार पर मॉरिशस के बारे में एक अनुच्छेद लिखिए।
- (ख) अपनी पसंद के किसी विषय पर इसी प्रकार की ‘चित्रात्मक सूचना’ की रचना कीजिए, जैसे—आपका विद्यालय, कोई विशेष दिवस, आपके जीवन की कोई विशेष घटना आदि (संकेत—यह कार्य आप अपने समूह में मिलकर कर सकते हैं। इसके लिए आप किसी कागज पर चित्र चिपका सकते हैं और सूचना को कलात्मक रूप से कम शब्दों में लिख सकते हैं। चित्र बनाए भी जा सकते हैं। आप यह कार्य कंप्यूटर या मोबाइल फोन की सहायता से भी कर सकते हैं।)



हस्ताक्षर

आप जानते ही हैं कि यह पाठ हिंदी के प्रसिद्ध लेखक रामधारी सिंह ‘दिनकर’ ने लिखा है। वे अपने नाम को कुछ इस प्रकार लिखते थे—

रामधारी सिंह दिनकर

अपनी पहचान प्रकट करने के लिए अपने नाम को किसी विशेष प्रकार से लिखने को हस्ताक्षर कहते हैं। हस्ताक्षर का प्रयोग व्यक्ति को जीवनभर अनेक कार्यों के लिए करना होता है। आपके विद्यालय में भी आपसे हस्ताक्षर करवाए जाते होंगे। आप प्रार्थना-पत्रों के अंत में भी अपने हस्ताक्षर करते होंगे।

हो सकता है अभी आपने अपने हस्ताक्षर निर्धारित न किए हों। यदि नहीं भी किए हैं तो कोई बात नहीं। आप चाहें तो आज भी अपने हस्ताक्षर निर्धारित कर सकते हैं।

नीचे दिए गए स्थान पर अपने हस्ताक्षर पाँच बार कीजिए। ध्यान रखें कि आपके हस्ताक्षर एक जैसे हों, अलग-अलग न हों।





पत्र

यहाँ 'दिनकर' का लिखा एक पत्र दिया जा रहा है। इसे पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर लिखिए। पत्र पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपने समूह में मिलकर खोजिए—

नई दिल्ली

8-7-67

मान्यवर चतुर्वेदी जी,

आपका कृपा-पत्र मिला। मेरा स्वास्थ्य इधर बहुत गिर गया है और संयम के बावजूद तेजी से सुधर नहीं रहा है। मेरा चित्त अभी भी दबा हुआ है। ऐसी अवस्था में मैंने दो सप्ताह के लिए मॉरिशस जाना स्वीकार कर लिया है। 15 जुलाई को प्रस्थान करना है। लौटना शायद 5 अगस्त तक हो।

आपके आशीर्वाद की कामना करता हूँ।

आपका दिनकर

सफदरजंग लेन, नई दिल्ली

- (क) पत्र किसने लिखा है?
- (ख) पत्र किसे लिखा गया है?
- (ग) पत्र किस तिथि को लिखा गया है?
- (घ) पत्र किस स्थान से लिखा गया है?
- (ङ) पत्र पाने वाले के नाम से पहले किस शब्द का प्रयोग किया गया है?
- (च) पत्र-लेखक ने अपने नाम से पहले अपने लिए क्या शब्द लिखा है?



उलझन सुलझाओ

महाराष्ट्र

- (क) "जहाज नैरोबी से चार बजे शाम को उड़ा और पाँच घंटों की निरंतर उड़ान के बाद जब वह मॉरिशस पहुँचा, तब वहाँ रात के लगभग दस बजे रहे थे।"



जहाज नैरोबी से शाम 4 बजे उड़ा तो उसे 5 घंटों की उड़ान के बाद रात 9 बजे मॉरिशस पहुँचना चाहिए था। लेकिन वह पहुँचा लगभग दस बजे। क्यों?

आप इसका कारण पता करने के लिए अपने शिक्षकों या इंटरनेट की सहायता ले सकते हैं।

(ख) नीचे दो घड़ियों के चित्र दिए गए हैं। एक घड़ी भारत के समय को दिखा रही है। दूसरी घड़ी दिखा रही है कि उसी समय मॉरिशस में कितने घंटे और मिनट हुए हैं।

इन घड़ियों के अनुसार नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—



भारत में घड़ी



मॉरिशस में घड़ी

- भारत में क्या समय हुआ है?
- मॉरिशस में क्या समय हुआ है?
- मॉरिशस और भारत के समय में कितने घंटे और मिनट का अंतर है?
- सूर्योदय भारत में पहले होगा या मॉरिशस में?
- जिस समय भारत में दोपहर के 12 बजे होंगे, उस समय मॉरिशस की घड़ियाँ कितना समय दिखा रही होंगी?



आज की पहेली

आज हम आपके लिए एक अनोखी पहेली लाए हैं। यहाँ एक वाक्य दिया गया है। आपको पता करना है कि इसका क्या अर्थ है—



येला मालथ येला घौलश।

मेरा _____

संकेत

क ← ख



खोजबीन के लिए

नीचे दी गई रचनाओं को पुस्तक में दिए गए क्यूआर कोड की सहायता से पढ़ें, देखें व समझें—

- चाँद का कुत्ता
- मिर्च का मज्जा
- राष्ट्रकवि रामधारी सिंह ‘दिनकर’ की जीवनी
- हिमालय के पर्वतीय प्रदेश की मनोरम यात्रा



पेड़ की बात

क्या आपने कभी कोई बीज बोया है? बीज से पेड़ बनने की कहानी बहुत रोचक है। कैसे अंकुर फूटता है, पौधा बनता है, धीरे-धीरे बढ़ता है और बड़ा पेड़ बन जाता है। आइए जानते हैं पेड़ की बात.....

बहुत दिनों तक मिट्टी के नीचे बीज पड़े रहे। इसी तरह महीना-दर-महीना बीतता गया। सर्दियों के बाद वसंत आया। उसके बाद वर्षा की शुरूआत में दो-एक दिन पानी बरसा। अब और छिपे रहने की आवश्यकता नहीं थी! मानों बाहर से कोई शिशु को पुकार रहा हो, ‘और सोए मत रहो, ऊपर उठ जाओ, सूरज की रोशनी देखो।’ आहिस्ता-आहिस्ता बीज का ढक्कन दरक गया, दो सुकोमल पत्तियों के बीच अंकुर बाहर निकला। अंकुर

का एक अंश नीचे माटी में मज़बूती से गड़ गया और दूसरा अंश माटी भेदकर ऊपर की ओर उठा। क्या तुमने अंकुर को उठते देखा है? जैसे कोई शिशु अपना नन्हा-सा सिर उठाकर आश्चर्य से नई दुनिया को देख रहा है!

वृक्ष का अंकुर निकलने पर जो अंश माटी के भीतर प्रवेश करता है, उसका नाम जड़ है और जो अंश ऊपर की ओर बढ़ता है, उसे तना कहते हैं। सभी पेड़-पौधों में ‘जड़ व तना’ ये दो भाग मिलेंगे। यह एक आश्चर्य की बात है कि पेड़-पौधों को जिस तरह ही रखो, जड़ नीचे की ओर जाएगी व तना ऊपर की ओर उठेगा। एक गमले में पौधा था। परीक्षण करने के लिए कुछ दिन गमले को औंधा लटकाए रखा। पौधे का सिर नीचे की तरफ़ लटका रहा और जड़ ऊपर की



ओर रही। दो-एक दिन बाद क्या देखता हूँ कि जैसे पौधे को भी सब भेद मालूम हो गया हो। उसकी सब पत्तियाँ और डालियाँ टेढ़ी होकर ऊपर की तरफ उठ आईं तथा जड़ घूमकर नीचे की ओर लटक गईं। तुमने कई बार सर्दियों में मूली काटकर बोई होगी। देखा होगा, पहले पत्ते व फूल नीचे की ओर रहे। कुछ दिन बाद देखोगे कि पत्ते और फूल ऊपर की ओर उठ आए हैं।

हम जिस तरह भोजन करते हैं, पेड़-पौधे भी उसी तरह भोजन करते हैं। हमारे दाँत हैं, कठोर चीज़ खा सकते हैं। नन्हे बच्चों के दाँत नहीं होते वे केवल दूध पी सकते हैं। पेड़-पौधों के भी दाँत नहीं होते, इसलिए वे केवल तरल द्रव्य या वायु से भोजन ग्रहण करते हैं। पेड़-पौधे जड़ के द्वारा माटी से रस-पान करते हैं। चीनी में पानी डालने पर चीनी गल जाती है। माटी में पानी डालने पर उसके भीतर बहुत-से द्रव्य गल जाते हैं। पेड़-पौधे वे ही तमाम द्रव्य सोखते हैं। जड़ों को पानी न मिलने पर पेड़ का भोजन बंद हो जाता है, पेड़ मर जाता है।

सूक्ष्मदर्शी से अत्यंत सूक्ष्म पदार्थ स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं। पेड़ की डाल अथवा जड़ का इस यंत्र द्वारा परीक्षण करके देखा जा सकता है कि पेड़ में हज़ारों-हज़ार नल हैं। इन्हीं सब नलों के द्वारा माटी से पेड़ के शरीर में रस का संचार होता है।

इसके अलावा वृक्ष के पत्ते हवा से आहार ग्रहण करते हैं। पत्तों में अनगिनत छोटे-छोटे मुँह होते हैं। सूक्ष्मदर्शी के जरिए अनगिनत मुँह पर अनगिनत होंठ देखे जा सकते हैं। जब आहार करने की ज़रूरत न हो तब दोनों होंठ बंद हो जाते हैं। जब हम श्वास-प्रश्वास ग्रहण करते हैं तब प्रश्वास के साथ एक प्रकार की विषाक्त वायु बाहर निकलती है, उसे ‘अंगारक’ वायु कहते हैं। अगर यह झरहाली हवा पृथ्वी पर इकट्ठी होती रहे तो तमाम जीव-जंतु कुछ ही दिनों में उसका सेवन करके नष्ट हो सकते हैं। ज़रा विधाता की करुणा का चमत्कार तो देखो, जो जीव-जंतुओं के लिए जहर है, पेड़-पौधे उसी का सेवन करके उसे पूर्णतया शुद्ध कर देते हैं। पेड़ के पत्तों पर



जब सूर्य का प्रकाश पड़ता है, तब पत्ते सूर्य-ऊर्जा के सहारे 'अंगारक' वायु से अंगार निःशेष कर डालते हैं। और यही अंगार वृक्ष के शरीर में प्रवेश करके उसका संवर्द्धन करते हैं। पेड़-पौधे प्रकाश चाहते हैं। प्रकाश न मिलने पर ये बच नहीं सकते। पेड़-पौधों की सर्वाधिक कोशिश यही रहती है कि किसी तरह उन्हें थोड़ा-सा प्रकाश मिल जाए। यदि खिड़की के पास गमले में पौधा रखो, तब देखोगे कि सारी पत्तियाँ व डालियाँ अंधकार से बचकर प्रकाश की ओर बढ़ रही हैं। वन-अण्ण्य में जाने पर पता लगेगा कि तमाम पेड़-पौधे इस होड़ में सचेष्ट हैं कि कौन जल्दी से सिर उठाकर पहले प्रकाश को झापट ले। बेल-लताएँ छाया में पड़ी रहने से, प्रकाश के अभाव में मर जाएँगी। इसलिए वे पेड़ों से लिपटती हुई, निरंतर ऊपर की ओर अग्रसर होती रहती हैं।

अब तो समझ गए होंगे कि प्रकाश ही जीवन का मूलमंत्र है। सूर्य-किरण का स्पर्श पाकर ही पेड़ पल्लवित होता है। पेड़-पौधों के रेशे-रेशे में सूरज की किरणें आबद्ध हैं। ईंधन को जलाने पर जो प्रकाश व ताप बाहर प्रकट होता है, वह सूर्य की ही ऊर्जा है। पेड़-पौधे व समस्त हरियाली प्रकाश हथियाने के जाल हैं। पशु-डाँगर, पेड़-पौधे या हरियाली खाकर अपने प्राणों का निर्वाह करते हैं। पेड़-पौधों में जो सूर्य का प्रकाश समाहित है वह इसी तरह जंतुओं के शरीर में प्रवेश करता है। अनाज व सब्ज़ी न खाने पर हम भी बच नहीं सकते हैं। सोचकर देखा जाए तो हम भी प्रकाश की खुराक पाने पर ही जीवित हैं।

कोई-कोई पेड़ एक वर्ष के बाद ही मर जाते हैं। सब पेड़ मरने से पहले संतान छोड़ जाने के लिए व्यग्र हैं। बीज ही उनकी संतान है। बीज की सुरक्षा व सार-सँभाल के लिए पेड़ फूल की पंखुड़ियों से घिरा एक छोटा-सा घर तैयार करता है। फूलों से आच्छादित होने पर पेड़ कितना सुंदर दिखलाई पड़ता है। जैसे फूल-फूल के बहाने वह स्वयं हँस रहा हो। फूल की तरह सुंदर चीज़ और क्या है? ज़रा सोचो तो, पेड़-पौधे तो मटमैली माटी से आहार व विषाक्त वायु से अंगारक ग्रहण करते हैं, फिर इस अपरूप उपादान से किस तरह ऐसे सुंदर फूल खिलते हैं। तुमने कथा तो सुनी होगी— स्पर्शमणि की अर्थात् पारस पत्थर की, जिसके स्पर्श से लोहा सोना हो जाता है। मेरे विचार से माँ की ममता ही वह मणि है। संतान पर स्नेह न्योछावर होते ही फूल खिलखिला उठते हैं। ममता का स्पर्श पाते ही मानो माटी व अंगार के फूल बन जाते हैं।

पेड़ों पर मुस्कराते फूल देखकर हमें कितनी खुशी होती है! शायद पेड़ भी कम प्रफुल्लित नहीं होते! खुशी के मौके पर हम अपने परिजनों को निमंत्रित करते हैं। उसी प्रकार फूलों की बहार छाने पर पेड़-पौधे भी अपने बंधु-बांधवों को बुलाते हैं। स्नेहसिक्त वाणी में पुकार सकते हैं, “कहाँ हो मेरे बंधु, मेरे बांधव, आज मेरे घर आओ। यदि रास्ता भटक जाओ, कहीं घर पहचान नहीं सको, इसलिए रंग-बिरंगे फूलों के निशान लगा रखे हैं। ये रंगीन पंखुड़ियाँ दूर से देख सकोगे।” मधुमक्खी व तितली के साथ वृक्ष की चिरकाल से घनिष्ठता है। वे दल-बल सहित फूल देखने आती हैं। कुछ पतंगे दिन के समय पक्षियों के डर से बाहर नहीं निकल सकते। पक्षी उन्हें देखते ही खा जाते हैं, इसलिए रात का अँधेरा घिरने तक वे छिपे रहते हैं। शाम होते ही उन्हें बुलाने की खातिर फूल चारों तरफ सुगंध-ही-सुगंध फैला देते हैं।

वृक्ष अपने फूलों में शहद का संचय करके रखते हैं। मधु-मक्खी व तितली बड़े चाव से मधुपान करती हैं। मधु-मक्खी के आगमन से वृक्ष का भी उपकार होता है।

तुम लोगों ने फूल में पराग-कण देखे होंगे। मधुमक्खियाँ एक फूल के पराग-कण दूसरे फूल पर ले जाती हैं। पराग-कण के बिना बीज पक नहीं सकता।

इस प्रकार फूल में बीज फलता है। अपने शरीर का रस पिलाकर वृक्ष बीजों का पोषण करता है। अब अपनी ज़िंदगी के लिए उसे मोह-माया का लोभ नहीं है। तिल-तिल कर संतान

की खातिर सब-कुछ लुटा देता है। जो शरीर कुछ दिन पहले हरा-भरा था, अब वह बिल्कुल सूख गया है। अपने ही शरीर का भार उठाने की शक्ति क्षीण हो चली है। पहले हवा बयार करती हुई आगे बढ़ जाती थी। पत्ते हवा के संग क्रीड़ा करते थे।



छोटी-छोटी डालियाँ ताल-ताल पर नाच उठती थीं। अब सूखा पेड़ हवा का आधात सहन नहीं कर सकता। हवा का बस एक थपेड़ा लगते ही वह थर-थर काँपने लगता है। एक-एक करके सभी डालियाँ टूट पड़ती हैं। अंत में एक दिन अकस्मात् पेड़ जड़ सहित भूमि पर गिर पड़ता है।

इस तरह संतान के लिए अपना जीवन न्योछावर करके वृक्ष समाप्त हो जाता है।

लेखक— जगदीशचंद्र बसु

अनुवादक— शंकर सेन



लेखक से परिचय



प्रसिद्ध वैज्ञानिक जगदीशचंद्र बसु का बचपन प्रकृति का अवलोकन करते हुए बीता। पेड़-पौधों, जीव-जंतुओं से प्रेम करते हुए उनकी शिक्षा आरंभ हुई। वे जीवविज्ञान, भौतिकी, वनस्पति विज्ञान तथा विज्ञान कथा लेखन में रुचि रखने वाले एक बहुविद् व्यक्ति थे। उन्होंने सिद्ध किया कि पौधों का एक निश्चित जीवनचक्र व एक प्रजनन प्रणाली होती है और वे (1858–1937) अपने परिवेश के प्रति जागरूक होते हैं। इस प्रकार वे यह स्थापित करने वाले विश्व के पहले व्यक्ति थे कि पौधे किसी भी अन्य जीव रूप के समान होते हैं। विज्ञान जैसे विषय को भी चित्रात्मक साहित्यिक स्वरूप प्रदान करने वाले जगदीशचंद्र बसु ने सर्वप्रथम रेडियो तरंगों के द्वारा संचार स्थापित कर एक बड़ी वैज्ञानिक खोज की थी। ‘पेड़ की बात’ का बांग्ला से हिंदी में अनुवाद शंकर सेन ने किया है।

पाठ से



मेरी समझ से

- (क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए—
- (1) “जैसे पौधे को भी सब भेद मालूम हो गया हो” पौधे को कौन-सा भेद पता लग गया?
- उसे उल्टा लटकाया गया है।
 - उसे किसी ने सजा दी है।
 - बच्चे को गमला रखना नहीं आया।
 - प्रकाश ऊपर से आ रहा है।
- (2) पेड़-पौधे जीव-जंतुओं के मित्र कैसे हैं?
- हमारे जैसे ही साँस लेते हैं।
 - हमारे जैसे ही भोजन ग्रहण करते हैं।
 - हवा को शुद्ध करके सहायता करते हैं।
 - धरती पर हमारे साथ ही जन्मे हैं।
- (ख) अब अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए और कारण बताइए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?



पंक्तियों पर चर्चा

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए।

- (क) “पेड़-पौधों के रेशे-रेशे में सूरज की किरणें आबद्ध हैं। ईंधन को जलाने पर जो प्रकाश व ताप बाहर प्रकट होता है, वह सूर्य की ही ऊर्जा है।”
- (ख) “मधुमक्खी व तितली के साथ वृक्ष की चिरकाल से घनिष्ठता है। वे दल-बल सहित फूल देखने आती हैं।”



मिलकर करें मिलान

पाठ में से चुनकर कुछ वाक्यांश नीचे दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें इनके सही अर्थ या संदर्भ से मिलाइए। इसके लिए आप शब्दकोश, इंटरनेट या अपने शिक्षकों की सहायता ले सकते हैं।

वाक्यांश	अर्थ या संदर्भ
1. बीज का ढक्कन दरक गया	1. मटमैली माटी और विषाक्त वायु से सुंदर-सुंदर फूलों में परिवर्तित होते हैं।
2. उसे 'अंगारक' वायु कहते हैं	2. जीवन के लिए सूर्य का प्रकाश आधारशक्ति या महत्वपूर्ण है।
3. पत्ते सूर्य ऊर्जा के सहारे 'अंगारक' वायु से अंगार निःशेष कर डालते हैं	3. अपनी संपन्नता और भावी पीढ़ी की उत्पत्ति से प्रसन्न-संतुष्ट।
4. प्रकाश ही जीवन का मूलमंत्र है	4. साँस छोड़ने पर निकलने वाली वायु-कार्बन डाईआक्साइड।
5. जैसे फूल-फूल के बहाने वह स्वयं हँस रहा हो	5. सूर्य के प्रकाश से पत्ते विषाक्त वायु के प्रभाव को नष्ट कर देते हैं।
6. इस अपरूप उपादान से किस तरह ऐसे सुंदर फूल खिलते हैं	6. बीज के दोनों दलों में दरार आ गई या फट गए।



सोच-विचार के लिए

पाठ को एक बार फिर से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए—

- (क) बीज के अंकुरित होने में किस-किस का सहयोग मिलता है?
- (ख) पौधे अपना भोजन कैसे प्राप्त करते हैं?





लेख की रचना

इस लेख में एक के बाद एक विचार को लेखक ने सुसंगत रूप से प्रस्तुत किया है। गमले को औंधा लटकाना या मूली काटकर बोना जैसे उदाहरण देकर बात कहना इस लेख का एक तरीका है। अपने तथ्य को वास्तविकता या व्यावहारिकता से जोड़ना भी इस लेख की विशेषता है।

- (क) जैसे लेखक ने ‘पेड़ की बात’ कही है वैसे ही अपने आस-पास की चीज़ें देखिए और किसी एक चीज़ पर लेख लिखिए, जैसे—गेहूँ की बात।
- (ख) उसे कक्षा में सबके साथ साझा कीजिए।



अनुमान या कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए।

- (क) “इस तरह संतान के लिए अपना जीवन न्योछावर करके वृक्ष समाप्त हो जाता है।” वृक्ष के समाप्त होने के बाद क्या होता है?
- (ख) पेड़-पौधों के बारे में लेखक की रुचि कैसे जागृत हुई होगी?

प्रवाह चार्ट

बीज से बीज तक की यात्रा का आरेख पूरा कीजिए—





अंकुरण

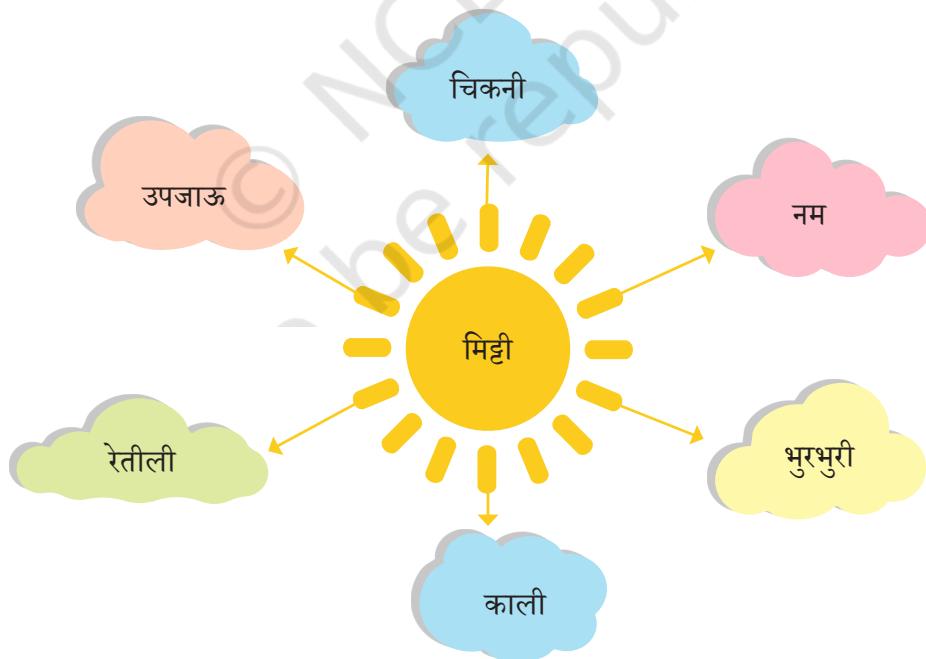
- मिट्टी के किसी भी पात्र में मिट्टी भरकर उसमें राजमा या चने के 4–5 बीज बो दीजिए।
- हल्का-सा पानी छिड़क दीजिए।
- 3–4 दिन तक थोड़ा-थोड़ा पानी डालिए।
- अब इसमें आए परिवर्तन लेखन पुस्तिका में लिखिए।
(संकेत— एक दिन में पौधे की लंबाई कितनी बढ़ती है, कितने पत्ते निकले, प्रकाश की तरफ पौधे मुड़े या नहीं आदि।)



शब्दों के रूप

नीचे दिए गए चित्र को देखिए।

यहाँ मिट्टी से जुड़े, कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं जो उसकी विशेषता बता रहे हैं। अब आप पेड़, सर्दी, सूर्य जैसे शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द बॉक्स बनाकर लिखिए—



पाठ से आगे



मेरे प्रिय

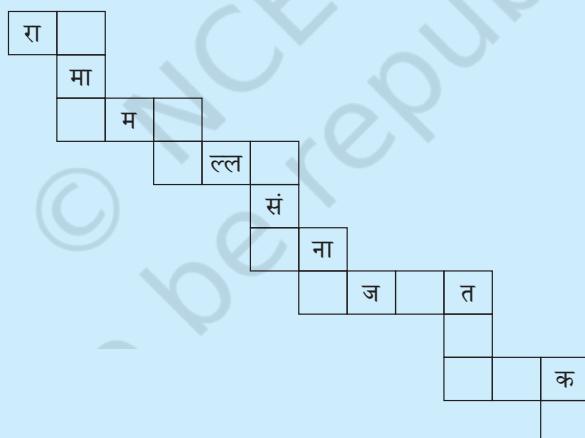
नीचे दी गई तालिका से प्रत्येक के लिए अपनी पसंद के तीन-तीन नाम लिखिए—

फूल	पक्षी	वृक्ष	पुस्तक	खेल



आज की पहली

इस शब्द सीढ़ी में पाठ में आए शब्द हैं। उन्हें पूरा कीजिए और पाठ में रेखांकित कीजिए—



खोजबीन के लिए

महसू

इंटरनेट कड़ियों का प्रयोग करके आप जगदीशचंद्र बसु के बारे में और जान-समझ सकते हैं—

- जगदीशचंद्र बसु
- जगदीशचंद्र बसु— एक विलक्षण और संवेदनशील वैज्ञानिक

पढ़ने के लिए

आओ बच्चो तुम्हें दिखाएँ झाँकी हिंदुस्तान की

आओ बच्चो, तुम्हें दिखाएँ झाँकी हिंदुस्तान की
इस मिट्ठी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।

उत्तर में रखवाली करता पर्वतराज विराट है
दक्षिण में चरणों को धोता सागर का सम्राट है
जमुना जी के तट को देखो गंगा का ये घाट है
बाट-बाट में हाट-हाट में यहाँ निराला ठाठ है
देखो, ये तस्वीरें अपने गौरव की अभिमान की
इस मिट्ठी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।

ये है अपना राजपूताना नाज इसे तलवारों पे
इसने सारा जीवन काटा बरछी तीर कटारों पे
ये प्रताप का वतन पला है आजादी के नारों पे
कूद पड़ी थी यहाँ हज़ारों पदिमनियाँ अंगारों पे
बोल रही है कण-कण से कुर्बानी राजस्थान की
इस मिट्ठी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।

देखो, मुल्क मराठों का ये यहाँ शिवाजी डोला था
मुगलों की ताकत को जिसने तलवारों पे तोला था
हर पर्वत पे आग जली थी हर पत्थर एक शोला था
बोली हर-हर महादेव की बच्चा-बच्चा बोला था
शेर शिवाजी ने रखी थी लाज हमारी शान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।

जलियाँवाला बाग ये देखो, यहाँ चली थी गोलियाँ
ये मत पूछो किसने खेली यहाँ खून की होलियाँ
एक तरफ़ बंदूकें दन-दन एक तरफ़ थी टोलियाँ
मरनेवाले बोल रहे थे इंकलाब की बोलियाँ
यहाँ लगा दी बहनों ने भी बाजी अपनी जान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।

ये देखो बंगाल यहाँ का हर चप्पा हरियाला है
यहाँ का बच्चा-बच्चा अपने देश पे मरनेवाला है
ढाला है इसको बिजली ने भूचालों ने पाला है
मुट्ठी में तूफान बँधा है और प्राण में ज्वाला है
जन्मभूमि है यही हमारे वीर सुभाष महान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।

— कवि प्रदीप

शब्दकोश

यहाँ आपके लिए एक छोटा-सा शब्दकोश दिया गया है। इस शब्दकोश में वे शब्द हैं जो विभिन्न पाठों में आए हैं और आपके लिए नए हो सकते हैं। किसी-किसी शब्द के कई अर्थ भी हो सकते हैं। पाठ के संदर्भ से जोड़कर आप यह अनुमान स्वयं लगाएँ कि कौन-सा अर्थ पाठ के लिए अधिक उपयुक्त है।

कहीं-कहीं शब्दों के अनेक समानार्थी भी दिए गए हैं। इससे आप प्रसंग के अनुसार अनुकूल शब्द का चयन करना सीख सकेंगे। यह शब्दकोश आपको शब्दों के न केवल सही अर्थ जानने में मदद करेगा अपितु शब्दों की सही वर्तनी भी सिखाएगा।

शब्द का अर्थ देने से पहले मूल शब्द के बाद कोष्ठक में एक संकेताक्षर दिया गया है। इन संकेतों से हमें शब्दों की भाषा और व्याकरण संबंधी जानकारी मिलती है। यहाँ जो संकेताक्षर अथवा संक्षिप्त रूप प्रयुक्त हुए हैं, वे इस प्रकार हैं—

अं.— अंग्रेजी	अ.— अव्यय	(अ.)— अरबी	अ.क्रि.— अकर्मक क्रिया
पु.— पुलिंग	फा.— फारसी	वि.— विशेषण	सं.— संस्कृत
स.क्रि.— सकर्मक क्रिया	सर्व.— सर्वनाम	स्त्री.— स्त्रीलिंग	

शब्दार्थ

अ

अंकुर [पु.सं.]— कली, नोंक, रोआँ, जल, रुधिर, विकास आदि के सूचक चिह्न

अंगारक [पु.सं.]— कार्बन, छोटा, अंगारा

अकस्मात् [अ.सं.]— अचानक, संयोगवश, सहसा, बिना कारण

अचंभित [वि.]— चकित, विस्मित

अधर [वि.सं.]— होंठ, नीचा, अंतरिक्ष, पाताल

अधीर [वि.सं.]— धैर्यरहित, उतावला, आकुल, दृढ़तारहित

अनगिनत [वि.]— बेहिसाब, अगणित

अनुमति [स्त्री.सं.]— कोई काम करने, जाने-आने आदि के लिए किसी से ली गई स्वीकृति

अपरूप [वि.सं.]— कुरुप, भद्वा, अपूर्व

अप्रेटिस [पु.अं.]— काम सीखने के लिए काम करने वाला व्यक्ति

अभिलाषा [स्त्री.सं.]— इच्छा, चाह, लोभ

अमराई [स्त्री.]— आम का बाग, उद्यान

अमावस [स्त्री.]— कृष्ण पक्ष की अंतिम रात्रि, अमावस्या



अरि-मस्तक [पु.सं.]— शत्रु का माथा
अर्पण [पु.सं.]— देना, दान करना, भेंट करना, वापस करना
असबाब [पु.(अ.)]— आवश्यक सामग्री, चीज़, वस्तु, मुसाफिर के साथ का सामान
असुर [पु.सं.]— दैत्य, दानव, खल, बादल
अस्तबल [पु.(अ.)]— अश्वशाला, तबेला

आ

आगमन [पु.सं.]— लौटना, आना, प्राप्ति, उत्पत्ति
आघात [पु.सं.]— चोट, प्रहार, धक्का, घाव
आच्छादित [वि.सं.]— ढका हुआ, छिपा हुआ
आत्मबल [पु.]— आत्मा का बल, मन का बल
आबद्ध [वि.सं.]— बँधा हुआ, बाधित, जकड़ा हुआ, निर्मित
आहिस्ता [अ.फा.]— धीरे-से, धीमी आवाज़ से

उ

उदारता [स्त्री.सं.]— दानशीलता, उदार स्वभाव
उपादान [पु.सं.]— ग्रहण, स्वीकार, वह द्रव्य जिससे कोई वस्तु बने, प्रयोग

क

कंटोप [पु.]— वह टोपी जिससे कान ढके रहे
कपाल [पु.सं.]— खोपड़ी, मस्तक, घड़े का टुकड़ा, ढक्कन
करवाल [पु.सं.]— तलवार, खड़ग, नाखून
कलंकित [वि.सं.]— कलंकयुक्त, मोरचा लगा हुआ
कसौटी [स्त्री.]— परख, जाँच, एक काला पत्थर जिस पर सोना घिसकर परखा जाता है
क्रीड़ा [स्त्री.सं.]— खेल-कूद, किलोल, हास्य-विनोद

क्ष

क्षीण [पु.सं.]— दुर्बल, दुबला-पतला, क्षतिग्रस्त, घटा हुआ

ख

खरहरा [पु.]— कंधी करना, लोहे की कई दंतपंक्तियों वाली चौकोर कंधी जिससे घोड़े के बदन की गर्द साफ़ की जाती है

घ

घटा [स्त्री.सं.]— जल भेरे बादलों का समूह, मेघमाला

घहर [अ.क्रि.]— पसरना, गरजना, गर्जन

घृणा [स्त्री.सं.]— नफरत, धिन

च

चित्त [पु.सं.]— मन, अंतःकरण की चिंतना

चिरायु [वि.सं.]— दीर्घायु, बहुत दिन जीने वाला, चिरजीवी

चोगा [पु.फा.]— लंबा, ढीला-ढाला अँगरखा जिसका आगे का भाग खुला होता है, गाउन

छ

छटा [स्त्री.सं.]— शोभा, छवि, झलक, बिजली

छद्म [पु.सं.]— छल-कपट, बदला हुआ भेष

छहर [स्त्री.]— बिखरना, बिखरने की क्रिया

छीको [पु.]— रस्सी, तार आदि से बनी झोली जैसी चीज़ जिसे छत आदि से लटकाकर उस पर खाने-पीने की चीज़ें रखते हैं, सिकहर, छीका

ज

जन्मदात्री [स्त्री.]— माता, माँ, जननी

जलज [वि.]— कमल, जल में उत्पन्न

जलधर [पु.सं.]— बादल, मेघ

जौहरी [पु.(अ.)]— जवाहरात का रोजगार करने वाला, रत्न-व्यवसायी, पारखी

त

तरुणाई [स्त्री.]— युवावस्था, जवानी

तरुवर [पु.सं.]— वृक्ष, पेड़

ताड [पु.]— एक लंबा वृक्ष जिसमें शाखाएँ नहीं होतीं सिर्फ़ सिरे पर पत्तियाँ होती हैं

तिमिर [पु.सं.]— अंधकार, आँख का एक रोग, अँधेरा

तुच्छातितुच्छ [वि.सं.]— एकदम गया-गुजरा, अत्यंत निकृष्ट

तुर्ग [पु.(अ.)]— टोपी आदि में लगी हुई कलगी, अनोखा

द

दरक [स्त्री.]— दरकने की क्रिया, दरार, चीर

दीवान [पु.फा.]— प्रधानमंत्री, राजा या बादशाह की बैठक या थाने का मुश्शी जिसके ज़िम्मे लिखापढ़ी का काम होता है

दूब [स्त्री.]— एक प्रकार की धास, दूर्वा

देववाणी [स्त्री.]— देवताओं की वाणी, आकाशवाणी

द्रव्य [पु.सं.]— तरल पदार्थ, किसी पदार्थ का तरल रूपांतर

ध

धरा [स्त्री.सं.]— पृथ्वी, धरती

धावा [पु.]— किसी को जीतने, लूटने आदि के लिए बहुत से लोगों का एक साथ दौड़ पड़ना, हमला

धृष्टापूर्ण[स्त्री.सं.]— ढिठाई के साथ, उद्धंतायुक्त, निर्दयता के साथ

न

नद [पु.सं.]— बड़ी नदी, सरिता

नाईं [अ.]— तरह, भाँति

निदान [पु.सं.]— अंत में, आखिर, आदि कारण, रोग का कारण, रोग का निर्णय

निरापद [वि.सं.]— निर्विघ्न, सुरक्षित, आपत्ति से रहित

निर्भीक [वि.सं.]— जो किसी से भय न खाए, निडर, निरापद

निषंग [पु.सं.]— तरक्षा, तूणीर, तलवार

नेकनामी [स्त्री.फा.]— सुख्याति, सुप्रसिद्धि, सुकीर्ति

नौसिखिया [वि.]— अनुभवहीन, जिसने हाल में ही सीखा हो

न्योछावर [स्त्री.]— समर्पण करना, त्यागना

प

पठायो [स.क्रि.]— भेजना
 पतियायो [स.क्रि.]— विश्वास करना, बात मानना
 पराग-कण [पु.सं.]— फूल के भीतर की धूल, पुष्परज
 पात्र [पु.सं.]— किरदार, अभिनेता, बरतन
 पावस [पु.]— वर्षाक्रित्तु, मानसून, समुद्र की ओर से आनेवाली वर्षा-सूचक हवा
 पुतली [स्त्री.]— आँख के बीच का काला भाग जिसके मध्य में रूप ग्रहण करने वाली इंद्रिय
 होती है
 पुनीत [वि.सं.]— पवित्र किया हुआ, शुद्ध
 पुलकी [वि.सं.]— रोमांचयुक्त, आनंदित
 पेचीदा [वि.फा.]— कठिन, उलझन वाला
 पैठना [अ.क्रि.]— गहरे में जाना, प्रवेश करना
 प्रफुल्लित [वि.]— खिला हुआ, अति प्रसन्न, प्रमुदित
 प्राणवत्ता [स्त्री.सं.]— प्राणवान, जीवित होने के भाव

ब

बज्र-मय [वि.सं.]— कठोर, उग्र, भीषण
 बड़ेन [पु.वि.]— उच्च, सामर्थ्यशाली
 बदतर [वि.फा.]— अधिक बुरा, ज्यादा खराब
 बरबस [अ.]— अकारण, बलपूर्वक, व्यर्थ
 बहियन [स्त्री.]— बाँह, भुजा, बाजू
 बहुतायत [स्त्री.]— अधिकता, बढ़ती, विशेषता
 बांधव [पु.सं.]— निकट-संबंधी, भाई-बंधु, स्वजन
 बाग [स्त्री.]— लगाम, रस्सी
 बावरी [स्त्री.]— चौड़ा कुआँ जिसमें नीचे जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हों, जलाशय,
 बावली
 बिहँसि [अ.क्रि.]— मंद-मंद मुस्कराना, खिलना

भ

भटक्यो [अ.क्रि.]— भटकना, इधर-उधर फिरना
 भ्रांति [स्त्री.सं.]— भ्रम, संदेह, चक्कर, अस्थिरता

म

मंदाग्नि [स्त्री.सं.]— पाचन शक्ति का दुर्बल हो जाना, हाजमे का बिगड़ जाना
 मद [स्त्री.(अ.)]— खाता, लेखा, उन्माद, अहंकार
 मधुबन (मधुवन) [पु.]— फूलों का बगीचा, बाग
 मुद्राएँ [स्त्री.सं.]— मुख, हाथ, गर्दन आदि की कोई विशेष भावसूचक स्थिति, मुख चेष्टा,
 नाम की मोहरें
 मुल्क [पु.(अ.)]— देश, राज्य, प्रदेश
 मोहना [स.क्रि.]— लुभाना, छलना

र

रईस [पु.(अ.)]— उच्च वर्ग का आदमी, धनी, अमीर, शिष्ट
 रकबा [पु.]— क्षेत्रफल, घिरी हुई जमीन, घेरा, अहाता
 रण [पु.सं.]— युद्ध, संग्राम, लड़ाई, गति
 रियासत [स्त्री.(अ.)]— राज, शासन, अमीरी
 रेजीमेंट [स्त्री. अं.]— सेना का एक स्थायी विभाग, कर्नल के अधीन और कई टुकड़ियों में
 विभक्त
 रोपना [स.क्रि.]— लगाना, जमाना, पौधा लगाना
 रोमावलि [स्त्री.सं.]— रोमों की पंक्ति, रोयाँ

ल

लघु [वि.सं.]— छोटा, निर्बल, फुर्तीला, हल्का, कम
 लझू होना [पु.]— मोहित होना, मुथ होना, हैरान होना
 लौ [स्त्री.]— ज्वाला, दीपशिखा, चाह, आशा, कामना

व

वकालतनामा [पु.(अ.)]— किसी मुकदमे में वकील होने का प्रमाण-पत्र, वह लेख जिसके
 जरिए किसी वकील को किसी मुकदमे की पैरवी का अधिकार
 दिया जाए

वसुंधरा [स्त्री.सं.]— पृथ्वी, देश
 वाद्ययंत्र [पु.सं.]— बाजा, बजाने का यंत्र
 विकराल [वि.सं.]— भीषण, भयंकर
 विगलित [वि.सं.]— पिघला हुआ, बहा हुआ, बिखरा हुआ, गिरा हुआ, सूखा हुआ,
 शिथिल
 विज्ञापन [पु.सं.]— निवेदन, समाचार-पत्रों आदि में प्रचार
 विषाक्त [वि.सं.]— विष मिश्रित
 वीरगति [वि.सं.]— युद्धक्षेत्र में या युद्ध करते हुए मृत्यु
 वैरी [वि.सं.]— शत्रु, शत्रुतापूर्ण, विरोधी, योद्धा
 व्यग्र [वि.सं.]— व्याकुल, परेशान, घबराया हुआ, व्यस्त

श

शर्मिदा [वि.फा.]— लज्जित, लजाया हुआ
 शस्य-श्यामला [वि.सं.]— नई धास, फसल, अन्न, धान, श्रेष्ठ
 श्राप [पु. सं.]— अमुक का बुरा हो ऐसी बुरी भावना व्यक्त करना, शाप, भर्त्सना
 श्वास-प्रश्वास [पु.सं.]— साँस लेना और निकालना

स

संचय [पु.सं.]— एकत्र करना, जोड़, बड़ी राशि, ढेर, संधि
 सचेष्ट [वि.सं.]— चेष्टाशील, चेष्टा करने वाला
 सनद [स्त्री.(अ.)]— वह जिस पर पीठ टेकी जाए, प्रमाण-पत्र, अनुमति-पत्र
 सवेरा [पु.]— प्रातःकाल, सुबह, सूर्योदय काल, सबेरा
 समाँ [पु.]— समय, क्रतु, बहार
 समृद्ध [वि.सं.]— संपन्न, सशक्त, धनी, उन्नतिशील
 सरवर [पु.फा.]— सरोवर, ताल, तालाब, झील
 सरित [स्त्री.सं.]— नदी, सरिता, धारावाहिक
 साक्षात्कार [सं.पु.]— प्रत्यक्ष भेंट, मुलाकात, ज्ञान, अनुभूति
 साधना [स्त्री.सं.]— अभ्यास करना, आराधना, उपासना, इकट्ठा करना
 सिंधु [पु.सं.]— समुद्र, सागर, एक प्रसिद्ध नदी, दान
 सिक्त [वि.सं.]— सींचा हुआ, भींगा हुआ, गीला



सुयशा [पु.सं.]— सुंदर यश, सुकीर्ति
सुरम्य [वि.सं.]— अति रमणीय, मनोहर
सूक्ष्म पदार्थ [वि.सं.]— बहुत बारीक तत्व, वस्तु
सूक्ष्मदर्शी [वि.सं.]— बहुत बारीक देखने वाला यंत्र, अणु रूप देखने वाला यंत्र
स्नेह [पु.सं.]— प्रेम, कोमलता, तेल, दयालुता

ह

हतप्रभ [वि.सं.]— जिसकी कांति क्षीण हो गई हो
हय-टाप [स्त्री.सं.]— घोड़े के पाँव के पृथ्वी पर पड़ने से उठी आवाज़

पहेलियों के उत्तर

पाठ

संख्या

1.	मातृभूमि	शब्दजाल	अलगोजा, बीन, बाँसुरी, सींगी, शहनाई, नादस्वरम, भंकोरा, शंख
3.	पहली बूँद	आज की पहेली	हिमालय, गंगा, भारत, कलियाँ, पवन
5.	रहीम के दोहे	शब्द पहेली	नगाड़ा, नयन, जलधर, दूब, अश्रु, अंबर
6.	मेरी माँ	आज की पहेली	चना, माचिस
7.	जलाते चलो	आज की पहेली	मंगलमयी, प्रत्येक, ग्यारह, धार्मिक, महान, स्वाधीन, दुखभरी, साधारण, छोटी, बड़ा, खूब, मनोहर
8.	सत्रिया और बिहू नृत्य	आज की पहेली	पवन, मारुत, वायु, समीर, बयार, अनिल
9.	मैया मैं नहिं माखन खायो	आज की पहेली	मूली, नारियल, होंठ, चींटी
11.	चेतक की बीरता	आज की पहेली	खोया, पनीर, मिठाई, छाछ, लस्सी, मक्खन, शरबत, आइसक्रीम
12.	हिंद महासागर में छोटा-सा हिंदुस्तान	आज की पहेली	जलज, पतंग, अंधेरा, गुलाबजामुन, मानचित्र
13.	पेड़ की बात	आज की पहेली	मेरा भारत मेरा गौरव

‘ब्रेल भारती’ हिंदी वर्ण व गिनती

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ
● ○ ○ ○ ○ ○	○ ● ○ ○ ● ● ○	○ ● ● ○ ○ ○	○ ○ ○ ○ ● ○	● ○ ○ ○ ● ●	● ○ ○ ○ ○ ○	○ ○ ● ○ ○ ○ ○ ○	● ○ ○ ○ ○ ○	○ ○ ● ● ○ ○ ○	● ○ ○ ○ ● ○
औ	.	:							
क	ख	ग	घ	ड़	च	छ	ज	झ	ञ
● ○ ○ ○ ● ○	○ ● ○ ○ ○ ●	● ● ○ ○ ○ ○	● ○ ○ ○ ○ ○	○ ● ○ ○ ● ●	● ● ○ ○ ○ ○	● ○ ○ ○ ○ ○	○ ● ○ ○ ○ ○	○ ○ ○ ○ ● ●	○ ○ ○ ○ ○ ○
ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ধ	ন
○ ○ ● ● ● ●	○ ● ● ● ○ ●	● ● ○ ○ ○ ○	● ● ● ● ○ ○	○ ● ○ ○ ● ●	○ ● ● ● ○ ○	● ● ○ ○ ○ ○	● ● ○ ○ ○ ○	○ ● ● ● ○ ○	○ ○ ○ ○ ○ ○
प	ফ	ব	ভ	ম	য	ৱ	ল	ব	শ
● ○ ● ○ ● ○	● ● ● ○ ○ ○	● ○ ● ○ ○ ○	○ ○ ○ ○ ○ ○	● ● ○ ○ ● ○	● ● ○ ○ ● ○	● ○ ○ ○ ● ○	● ○ ● ○ ○ ○	● ○ ● ○ ● ○	● ○ ● ○ ○ ○
ষ	স	হ	ক্ষ	ত্ৰ	জ্ঞ				
● ○ ● ○ ● ○	○ ● ● ○ ● ○	● ○ ● ○ ○ ○	● ● ○ ○ ● ○	○ ○ ● ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ● ○	● ○ ○ ○ ○ ○				
ঁ	ঁ	ঁ	ঁ	ঁ	ঁ	ঁ	ঁ	ঁ	ঁ
○ ○ ○ ○ ○ ○	○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○	○ ○ ○ ○ ○ ○	○ ○ ○ ○ ○ ○	○ ○ ○ ○ ○ ○	○ ○ ○ ○ ● ○	○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○	○ ○ ○ ○ ○ ○	● ○ ○ ○ ○ ○	

১	২	৩	৪	৫
○ ● ● ○ ○ ● ○ ○ ● ● ○ ○	○ ● ● ○ ○ ● ○ ○ ● ● ○ ○	○ ● ● ○ ○ ● ○ ○ ● ● ○ ○	○ ● ● ○ ○ ● ○ ○ ● ● ○ ○	○ ● ● ○ ○ ● ○ ○ ● ● ○ ○
৬	৭	৮	৯	০
○ ● ● ○ ○ ● ○ ○ ● ● ○ ○	○ ● ● ○ ○ ● ○ ○ ● ● ○ ○	○ ● ● ○ ○ ● ○ ○ ● ● ○ ○	○ ● ○ ○ ○ ● ○ ○ ● ● ○ ○	○ ● ○ ○ ○ ● ○ ○ ● ● ○ ○

टिप्पणी

© NCERT
be republished

टिप्पणी

© NCERT
be republished